इकाई 5 निर्देशन के तकनीक

संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 निर्देशन के तकनीक

5.4 अमानकीकृत तकनीक

- 5.4.1 प्रश्नावली
- 5.4.2 अवलोकन
- 5.4.3 समाजमिति
- 5.4.4 आत्मकथा
- 5.4.5 निर्धारण मापनी
- 5.4.6 उपाख्यानक अभिलेख
- 5.4.7 केस अध्ययन
- 5.4.8 संचयी अभिलेख
- 5.4.9 साक्षात्कार

5.5 मानकीकृत तकनीक

- 5.5.1 अभिक्षमता परीक्षण
- 5.5.2 उपलब्धि परीक्षण
- 5.5.3 अभिरूचि मापनी
- 5.5.4 व्यक्तित्व परीक्षण

5.6 सारांश

5.7 इकाई अंत अभ्यास

5.1 प्रस्तावना

बच्चे संसार में वृद्धि करने, विकास करने एवं सीखने की सभी मानवीय संभावनाओं के साथ आनुवांशिक रूप से संपन्न होकर आते हैं। एक अभिभावक या शिक्षक के रूप में आप को प्रेरक अवसर है कि आप छोटे बच्चों के साथ अंतर्क्रिया करने वाले वयस्कों के समूह का अंग हैं और सतर्क एवं चिंतनपूर्ण निर्देशन तकनीकों के माध्यम से विकास की उनकी मानवीय संभावनाओं को प्रेरित करें। एक बच्चे की नैसर्गिक प्रतिभा चिंतनपूर्ण पोषण एवं निर्देशन से युक्त एक समृद्ध वातावरण की अपेक्षा करती है यदि प्रत्येक बच्चे में निहित मानवीय क्षमता को मानव जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लिए पूर्ण योगदान करने के क्रम में पूर्ण विकास तक पहुँचना है।

निर्देशन जो मानवीय संभावना को विकसित करने के लिए शिक्षाविदों द्वारा प्रयुक्त एक साधन है। बच्चा एक शिक्षक से न केवल विषय में प्रवीणता सीखता है बल्कि मूल्यों, मनोवृत्तियों एवं आदतों को भी सीखता है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- निर्देशन के तकनीक पद की व्याख्या कर सकेंगे;
- निर्देशन की महत्वपूर्ण तकनीकों का वर्णन कर सकेंगे;
- निर्देशन की विभिन्न अमानकीकृत एवं मानकीकृत तकनीकों को सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- निर्देशन की अमानकीकृत एवं मानकीकृत नकनीकों को चिह्नित कर सकेंगे;
- विद्यालयी व्यवस्था में निर्देशन की विभिन्न तकनीकों का उपयोग कर सकेंगे; और
- शिक्षा में निर्देशन की तकनीकों पर चर्चा कर सकेंगे।

5.3 निर्देशन के तकनीक

चयन निर्माण एवं समायोजन तथा समस्या का समाधान करने में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को दी जाने वाली सहायता ही निर्देशन (मार्गदशन) है। निर्देशन ग्राह्यकर्ता को स्वतंत्रतापूर्वक उन्नत होने तथा किसी को स्वयं उत्तरदायी होने की योग्यता को जोड़ने का लक्ष्य रखता है। यह एक सार्वभौमिक सेवा है जो केवल विद्यालय या परिवार तक सीमित नहीं होता है। यह जीवन के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है – घर में, व्यवसाय एवं उद्योग में, सरकार में, सामाजिक जीवन में, अस्पताल में और कारागार में; वस्तुतः यह उन सभी जगहों पर उपस्थित होता है जहाँ लोगों की सहायता की आवश्यकता होती है और जो सहायता प्रदान करते हैं।

एक व्यक्ति के बारे में आधारभूत आँकड़ों का संग्रह करने के लिए निर्देशकों द्वारा प्रयुक्त तकनीकें सामान्यतः मानकीकृत या अमानकीकृत होती हैं। अमानकीकृत तकनीकें हैं – प्रश्नावली, अवलोकन, समाजमीति, आत्मकथा, निर्धारण मापनी, उपाख्यानक अभिलेख, केस अध्ययन, संचयी अभिलेख, साक्षात्कार। मानकीकृत तकनीकें – अभिरूचियों, बुद्धि, मनोवृत्ति एवं व्यक्तित्व के गुणों को मापने के उपकरण हैं। दोनों श्रेणियों की तकनीकें प्राथमिक आँकड़े प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं। सभी तकनीकें उपयोगी हैं। निर्देशक को केवल मात्र यह ध्यान रखना चाहिए कि अपनाई गई तकनीकों को विश्वस्त एवं वैकल्पिक सूचना देनी चाहिए। बुद्धि, अभिरूचियों एवं मनोवृत्तियों के मानकीकृत परीक्षण विश्वस्त एवं वैध सूचना प्रदान करते हैं। ये पुनः प्रयोज्य एवं कम समय लेने वाले होते हैं तथा सरलतापूर्वक स्कोर किए जा सकते हैं। मानव सत्ता के अध्ययन में प्रयुक्त होने वाली अमानकीकृत तकनीकें भी सहायक होती हैं और कभी–कभी मानकीकृत परीक्षणों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सूचना प्रदान करती हैं। उदाहरणार्थ – आत्मकथा एक अमानकीकृत तकनीक है जो एक व्यक्ति की भावनात्मक समस्याओं में संकेतों एवं अंतर्दृष्टियों के साथ–साथ उम्मीदें एवं आकांक्षाएँ प्रदान करती है। उसी प्रकार, केस अध्ययन परामर्शदाता को व्यक्ति की संपूर्णता में समझने में सहायता करता है। फिर भी एक तकनीक का उपयोग, निर्देशक क्या जानना चाहता है उस पर निर्भर करता है।

5.4 अमानकीकृत तकनीक

अमानकीकृत तकनीकें सामान्यतः विविध स्थितियों में परामर्शदाताओं द्वारा व्यक्तिगत विश्लेषण के लिए अपनाई जाती हैं। ये तकनीकें मानवीय आँकलन के लिए आँकड़ों को

संग्रह करने एवं विश्लेषण करने के वृहत्तर, विविध और अधिक वस्तुनिष्ठ उपागम प्रदान करती हैं। अब हम निर्देशन की विविध अमानकीकृत तकनीकों पर चर्चा करेंगे।

5.4.1 प्रश्नावली

प्रश्नावली प्रश्नों की एक सूची होती है जिनका उत्तर विशेष रूप से सूचना या तथ्यों को प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति या व्यक्तियों के एक समूह द्वारा दिया जाना होता है। इसे अन्य तकनीकों के साथ मिलाने के लिए विस्तारित किया जाना चाहिए। परिस्थितियों एवं अभ्यासों जिनके बारे में उत्तर देने वाले के अनुमानित ज्ञान होने के बारे में सूचना प्राप्त करने के लिए प्रश्नों को निर्मित किया जाता है। एक प्रश्नावली में मूलतः दो प्रकार के प्रश्न होते हैं – मुक्तांत और अमुक्तांत। मुक्तांत प्रकार के प्रश्नों में व्यक्ति से सोचने एवं लिखने की अपेक्षा की जाती है। उदाहरणार्थ – आपका पसंदीदा खेल क्या है? अमुक्तांत प्रकार के प्रश्नों में उत्तर हाँ या नहीं के रूप में या दी गई सीमित श्रेणियों में देने की अपेक्षा की जाती है। मुक्तांत प्रश्न समय लेने वाले होते हैं और उनमें उत्तरों की व्याख्या करने के विशेष कौशल की अपेक्षा होती है। अमुक्तांत प्रश्नों वाली प्रश्नावली में आसानी से अंकन एवं व्याख्यायित किया जा सकता है और यह अधिक वस्तुनिष्ठ होता है।

i) अमुक्तांत प्रश्न

- लिंग ☐ पुरुष / स्त्री
- आप टेलीविजन पर प्रायः कितनी बार डिस्कवरी चैनल देखते हैं?

प्रतिदिन / सप्ताह में एक बार / कभी–कभी / कभी नहीं

ii) मुक्तांत प्रश्न

- आप टेलीविजन पर किस प्रकार के कार्यक्रमों को देखना पसंद करते हैं?
- अपने विद्यालय में विज्ञान–शिक्षण में सुधार के लिए आप क्या कदम उठाना चाहेंगे?

प्रश्नों की संख्या कम होनी चाहिए और समझने एवं उत्तर देने में आसान होने चाहिए। उन्हें सूचना के बिन्दुओं को प्रत्यक्षतः आवृत्त करना चाहिए।

इस तकनीक की अपनी सीमाएँ हैं। फिर भी, तथ्यात्मक आँकड़े प्राप्त करने के लिए ये बहुत अधिक प्रयुक्त किए जाते हैं।

5.4.2 अवलोकन

इस तकनीक में एक प्रशिक्षित अवलोकनकर्त्ता द्वारा अवलोकन के माध्यम से व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। तकनीक की प्रभावशीलता अवलोकनकर्त्ता के कौशल पर निर्भर करती है। अवलोकनकर्त्ता से अपेक्षा की जाती है कि वह पूर्वाग्रहों एवं पूर्वधारणाओं से मुक्त होकर सुपरिभाषित व्यवहारों का अवलोकन करे।

अवलोकनात्मक तकनीकें शिक्षार्थियों एवं व्यक्तियों के अध्ययन में उपयोगी हैं परंतु उनकी उपयोगिता संचालित किए जाने के तरीके एवं प्रयोजन पर निर्भर करती है।

5.4.3 समाजमिति

इस तकनीक का उद्देश्य एक समूह के अंतर्गत व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्ध की प्रकृति का अध्ययन करना होता है। यह व्यक्तित्व की समस्याओं विशेषतः पृथक्कता एवं अस्वीकृति को

पहचानने का अवसर देती है। जो शिक्षार्थी कक्षा में कोई सम्बन्ध नहीं रखते, अलग रहते हैं वे पृथक होते हैं। अस्वीकृत शिक्षार्थी अन्य शिक्षार्थियों द्वारा नापसंद किए जाते हैं। यह तकनीक शिक्षार्थियों के सामाजिक व्यवहार का आँकलन करने के लिए सूचना का उपयोगी स्रोत है।

समाजमितीय तकनीकों के सामान्यतः तीन प्रकार हैं: (i) प्रतिष्ठापन, (ii) सामाजिक स्वीकृति और (iii) कौन किसका या अनुमान करो कौन। प्रतिष्ठापन तकनीक में शिक्षक द्वारा सुझाए गए कुछ मानदंडों के आधार पर शिक्षार्थी को अपने सहपाठियों का चयन करने को कहा जाता है। उदाहरणार्थ – शिक्षक शिक्षार्थियों से कक्षा में तीन सर्वोत्तम मित्रों का नाम लेने को कह सकते हैं। सामाजिक स्वीकृति तकनीक में सामाजिक सम्बन्ध के स्तरों को बताया जाता है और शिक्षार्थियों से उनकी समाजमितीय पसंद व्यक्त करने को कहा जाता है। "अनुमान करो कौन" तकनीक में विविध प्रकार के शिक्षार्थियों के संक्षिप्त विवरण प्रदान किए जाते हैं और कहा जाता है कि अनुमान लगाओ कि इस विवरण में कौन मेल खाता है। उदाहरणार्थ – एक कथन हो सकता है "एक लड़का हमेशा अपने अभिभावकों के साथ संकट में रहता है, वह कौन है?

समाजमितीय आँकड़ों को समाज आरेख के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो एक समूह में आकर्षणों एवं प्रतिकर्षणों को दिखाता है और समूह के सम्बन्ध में शिक्षार्थियों की समस्याओं का पता लगाने में शिक्षक एवं परामर्शदाता की सहायता करता है।

5.4.4 आत्मकथा

आपने महान व्यक्तियों की आत्मकथाओं का अध्ययन अवश्य किया होगा। एक आत्मकथा एक व्यक्ति का अपने शब्दों में विवरण होता है। व्यक्ति के अध्ययन के लिए एक निर्देशन तकनीक के रूप में उस व्यक्ति की रूचियों, योग्यताओं, वैयक्तिक इतिहास, आशाओं, अपेक्षाओं, पसंद, नापसंद आदि के बारे में बहुमूल्य सूचना प्रदान करती है। निर्देशन में व्यक्ति को संरचित आत्मकथा दी जाती है और उन्हें उसके बारे में लिखने को कहा जाता है। इस प्रकार प्राप्त आत्मकथात्मक सामग्रियाँ अन्य साधनों द्वारा सत्यापित की जाती हैं। चूँकि, अनुभूतियों, मूल्यों एवं मनोवृत्तियों को किसी अन्य तकनीक द्वारा नहीं मापा जा सकता अतः इन अभिलक्षणों को मूल्यांकित करने के लिए आत्मकथा एक तकनीक के रूप में उपस्थित होती है।

5.4.5 निर्धारण मापनी

इस तकनीक में एक व्यक्ति के व्यवहार या गुण की उपस्थिति या अनुपस्थिति को मात्रात्मकता या गुणात्मकता के संदर्भ में निर्धारित किया जाता है। आपने अपने शिक्षार्थियों के निष्पादन, लेखन, आदतों और अन्य पहलुओं को अपने दैनिक शिक्षण में अवश्य निर्धारित किया होगा। उदाहरणार्थ – गणित में अशोक ने मीणा की अपेक्षा बेहतर किया है किंतु मीणा ने हिन्दी में सर्वोच्च अंक अर्जित किए हैं। राम, श्याम से लंबा है कितु श्याम, नीतेश से लंबा है। "रेट" (निर्धारण) शब्द का अर्थ किसी चीज के मूल्यों का अनुमान लगाना या किसी का निर्णय करना है। मार्गदर्शक जिसने विभिन्न स्थितियों में किसी व्यक्ति का अवलोकन किया है वह अपना निर्णय देता है। एक निर्धारण (रेटिंग) योजना में प्रत्येक शिक्षार्थी का एक समान गुण के आधार पर निर्णय होता है और निर्णय को एक पैमाने के रूप में व्यक्त किया जाता है जिस पर बहुत खराब, खराब, औसत, अच्छा – बहुत अच्छा अंकित रहता है। तुलना एवं सहजता के लिए निर्धारण मापनी को प्रोफाइल पर ग्राफ के रूप में दिखाया जाता है।

एक निर्धारण मापनी शब्दों, मुहावरों, वाक्यों, अनुच्छेदों की एक चयनित सूची है जिस पर एक अवलोकनकर्त्ता मूल्यों के कुछ वैकल्पिक पैमाने के आधार पर एक मूल्य या रेटिंग दर्ज करता है। यह एक विशेष प्रकार की जाँच सूची है जिसमें जाँच की गई मदों या अभिलक्षणों को एक गुण की उपस्थिति या अनुपस्थिति के स्तर के आधार पर गुणात्मक या मात्रात्मक रूप से रेटिंग किया जाता है।

एक निर्धारण मापनी में, अभिलक्षणों को दी गई बिन्दुओं की संख्या के अनुसार मापा जाता है। बिन्दु ग्रेडों या अंकों के संदर्भ में होते हैं। उदाहरणार्थ – अपरिचितों से मिलना एक व्यक्ति के लिए एक गंभीर समस्या उपस्थित कर सकता है और दूसरों के लिए कोई समस्या नहीं हो सकती है। इन दो बिन्दुओं के बीच समस्या की गंभीरता एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न–भिन्न हो सकती है। यहाँ मापन मात्रात्मक या गुणात्मक हो सकता है। उदाहरणार्थ – समस्या की गंभीरता को निम्न प्रकार से मापा जा सकता हैः

गुणात्मक मापन	मात्रात्मक मापन	ग्रेडिंग
कभी समस्या नहीं	0	E
कभी–कभार समस्या	1	D
किसी अवसर पर समस्या	2	C
उचित रूप से गंभीर समस्या	3	B
गंभीर समस्या	4	A

अभिलक्षणात्मक स्थितियाँ जिनमें निर्धारण मापनी प्रयुक्त होती हैं नीचे दी गई हैं। ये ऐसी स्थितियाँ हैं जब कोई अन्य तकनीक व्यक्ति के शैक्षणिक या व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता को विश्वस्त और वैध मापन प्रदान नहीं करती है।

1) वे क्षेत्र जिन्हें वस्तुनिष्ठ रूप से मापा नहीं जा सकता।

2) निर्धारण मापनी का उपयोग मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से संग्रहित सूचना को संपूरित करने के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थ – एक कक्षा की गतिविधि के लिए एक उपलब्धि परीक्षण किया गया। परीक्षण के परिणाम को कक्षाध्यापक द्वारा उन्हें प्रदान की गई रेटिंग की सहायता से सत्यापित किया जा सकता है।

3) उस परिस्थिति में जब मार्गदर्शक थोड़े समय में कई चीजों और कई शिक्षार्थियों के बारे में सूचना संग्रह करना चाहता है तो शिक्षक की रेटिंग को प्राप्त किया जा सकता है।

4) उस स्थिति में जब व्यक्ति को विशेष विशेषज्ञता की आवश्यकता हो तो उसके अध्ययन के लिए मानकीकृत उपकरणों की रचना में सूचना को निर्धारण मापनी के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जिनको अपेक्षाकृत तैयार करना आसान है।

5) निर्देशन एवं परामर्श में जब ग्राहक द्वारा स्व–विश्लेषण एवं स्व–मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। स्व–निर्धारण मापनी स्व–विश्लेषण के लिए उपयोगी सूचना प्रदान करती है जो कि बेहतर आत्मबोध को आगे बढ़ाता है।

निर्धारण मापनी की सीमाएँ

1) निर्धारण मापनी एक अवलोकनात्मक तकनीक है और उसकी अपनी सीमाएँ हैं जैसा कि अन्य अवलोकनात्मक तकनीकों की होती है। जब तक मार्गदर्शक रेटिंग के उद्देश्य

को स्पष्टता से नहीं समझता है तब तक रेटिंग से प्राप्त आँकड़े विश्वसनीय नहीं रह पाते हैं।

2) निर्धारण मापनी के लिए अवलोकनकर्त्ता के स्तर पर आवश्यक विशेषज्ञता एवं समझ की आवश्यकता होती है और प्रत्येक व्यक्ति इस कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होता है।

3) रेटिंग करने वाले कुछ लोग बहुत कम रेटिंग प्रदान करते हैं और कुछ अन्य बहुत अधिक। उचित देखभाल से इस कमी को दूर किया जा सकता है।

निर्धारण मापनी के प्रकारः कुछ प्रायः प्रयुक्त होने वाले निर्धारण मापनियों में सम्मिलित हैंः (क) विवरणात्मक, (ख) आलेखीय, (ग) चयन विधि, (घ) युग्मित तुलना, (ङ) कोटि क्रम।

क) विवरणात्मक निर्धारण मापनीः एक व्यक्ति के व्यवहार या मनोवृत्ति, उसके व्यक्तित्व की विशेषता का आँकलन करने के लिए इनका उपयोग किया जाता है। एक व्यक्ति के व्यवहार का आँकलन करने के लिए एक विवरणात्मक निर्धारण मापनी का एक उदाहरण निम्नलिखित है। पहले कॉलम में आपके पास कुछ मुहावरे हैं जो उपयोगिता के बदलते स्तर का वर्णन करते हैं जिसका एक व्यवस्थित क्रम है जो घटते या बढ़ते क्रम में हो सकता हैः

	सदैव	**प्रायः**	**कभी-कभी**	**कभी नहीं**
i) दूसरों के लिए मददगार	.....	.....	.....	.....
ii) क्या उससे पूछा गया?	.....	.....	.....	.....
iii) नई चीजों को करना पसंद करता है	.....	.....	.....	.....
iv) यात्राओं पर जाना पसंद करता है	.....	.....	.....	.....

उपर्युक्त उदाहरण वास्तविक जीवन व्यवहार के व्यवस्थित मूल्यांकन के लिए निर्धारण मापनी का एक उदाहरण है। अवलोकनकर्त्ता मुहावरे का चयन करता है जो इस गुण पर विचार करने के वर्णन के नजदीक या उस पर लागू होता है।

ख) आलेखीय निर्धारण मापनीः एक निर्धारण मापनी में एक गुण को संक्षिप्त विवरण द्वारा वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है। एक व्यक्ति में एक विशेषता की उपस्थिति को दिखाने वाली रेखा को 3, 5 या 7 बिन्दुओं में विभाजित किया जाता है।

आलेखीय निर्धारण मापनी का एक उदाहरण नीचे दिया गया है जो प्रयास की दृढ़ता को मापता है।

1	2	3	4	5
मामूली परेशानी पर निराश हो जाता है।	परेशानियों के बावजूद कुछ प्रयास करने के बाद छोड़ देता है।	जो भी संभव हो करने की कोशिश करता है फिर छोड़ देता है।	बार–बार असफल होने के बावजूद प्रयास करता रहता है।	लक्ष्य को पाने तक दृढ़ता रखता है, कभी नहीं छोड़ता।

शिक्षक एक बिन्दु पर एक चिह्न लगाता है जो धारण करने वाले गुण का वर्णन करता है। यदि आवश्यक हो तो इस बीच में एक जाँच चिह्न रखा जा सकता है।

ग) **चयन विधिः** यह निर्धारण मापनी के दो विकल्पों जैसे सही या गलत में से निर्धारक को एक के चुनने पर बल देता है। दो विकल्प एक समान लगते हैं फिर भी केवल एक कथन गुण की उपस्थिति या अनुपस्थिति को प्रदर्शित करता है। निर्धारण करने वाले को दबाव डाला जाता है कि एक को पसंद करे। ऐसे बहुत से कथन दिए जाते हैं और निर्धारण करने वाले को प्रत्येक जोड़े से दो में से केवल एक को चुनने को कहा जाता है।

जब रेटिंग करने वाला "ए" या "बी" को चुनता है तो उसका वास्तविक राय दिखाता है।

घ) **युग्मित तुलना निर्धारण मापनीः** इन पैमानों का उपयोग रेटिंग करने वाले द्वारा ज्ञात कुछ विशिष्ट प्रकार के निश्चित शिक्षार्थियों के संदर्भ बिन्दुओं के रूप में होता है और फिर एक तुलना की जाती है। एक उदाहरण इस प्रकार हैः शशि, प्रभा और रोशन विशिष्ट शिक्षार्थी हैं। पहला अत्यधिक सहयोगी है, दूसरा औसत और तीसरा कभी भी दूसरों के साथ सहयोग नहीं करता है। मापे जाने वाला गुण है सहयोग की भावना।

रोशन की तरह कभी सहयोग नहीं करता।	प्रभा जैसा सहयोग करता है।	शशि की तरह सहयोग करने के लिए सदैव तैयार रहता है।

ङ) **कोटि क्रम विधिः** इस विधि में शिक्षार्थियों के एक समूह को उनकी एक विशेषता के अनुसार कोटि दिया जाता है। यह कोटि इनको पढ़ाने वाले कई शिक्षकों द्वारा दी जाती है। फिर प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए एक औसत क्रम या स्तर निकाला जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) निर्धारण मापनी की किन्हीं तीन सीमाओं की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) विभिन्न प्रकार के निर्धारण मापनी की सूची बनाइए। इनमें से किसी एक का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.4.6 उपाख्यानक अभिलेख

एक उपाख्यानक अभिलेख में एक शिक्षार्थी से संबद्ध कुछ घटनाओं के बारे में छोटे विवरणात्मक खाते होते हैं। प्रत्येक खाता एक शिक्षार्थी के जीवन में एक सार्थक भाग का अभिलेख होता है। एक दिए गए शिक्षार्थी के संदर्भ में सार्थक होने के लिए अवलोकनकर्त्ता द्वारा अनुभूत एक घटना का यह एक सामान्य कथन है। जब ऐसी रिपोर्टें कुछ घटनाओं का तत्काल विवरण देती हैं तो वे दर्ज की जाती हैं ताकि उनकी कुछ सार्थकता हो सके, इन सभी को समग्रता में उपाख्यानक अभिलेख के रूप में जाना जाता है।

एक उपाख्यान की तुलना एक शिक्षार्थी के व्यवहार की एक घटना के स्नैपशॉट से की जा सकती है जो कुछ विशेष अभिप्राय का सुझाव देता है। ठीक वैसे जैसे एक कैमरा एक समय में एक व्यक्ति के भंगिमा को पकड़ लेता है, उसी प्रकार उपाख्यानक को एक अवलोकित व्यवहार का ठीक–ठीक रिपोर्ट करनी चाहिए। निर्देशन के मूलभूत सिद्धान्त के रूप में यदि हम एक व्यक्ति की अद्भूतता को स्वीकार करते हैं तो निर्देशन के उद्देश्य से हमारे लिए स्नैपशॉट शब्द का गहन अभिप्राय है। एक व्यक्ति का व्यवहार सदैव कुछ अनुभूत आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया से होता है। उदाहरणार्थ – एक व्यक्ति की सुरक्षा के लिए प्यार या धमकी की कामना इसके निश्चित अद्भूत व्यवहार प्रदर्शित करने का कारण हो सकता है। एक शिक्षक को एक बार यह नोट कर लेना चाहिए कि उसके पास एक शब्द स्नैपशॉट होना ही चाहिए।

स्नैपशॉट जैसे शब्द बहुत से शिक्षकों द्वारा लिखे गए हैं क्योंकि वे एक शिक्षार्थी विशेष से यथासंभव बहुत सी परिस्थितियों में मिलते हैं जोकि एक शिक्षार्थी के व्यवहार के प्रतिरूप या उसके व्यक्तित्व का एक सही तस्वीर प्रदान करता है।

उपाख्यानक अभिलेख का रखरखाव

एक उपाख्यानक अभिलेख एक परिस्थिति में एक शिक्षार्थी के विशिष्ट व्यवहार के बारे में एक शिक्षक द्वारा अवलोकन का परिणाम होता है। यह एक शिक्षार्थी की बेहतर समझ प्राप्त करने के लिए लिखा जाता है क्योंकि शिक्षक घटना को भूल सकता है यदि इसे नहीं लिखा गया हो। एक शिक्षक जो अवलोकन करता है उसे लिख देता है और कोई टिप्पणी नहीं देता है। वह व्यवहार का वर्णन कर सकता है और टिप्पणी के रूप में कुछ कह सकता है या वह व्यवहार का वर्णन कर सकता है और संभावित उपचारी तरीकों का सुझाव दे सकता है।

क्या अवलोकन किया जाए: प्रत्येक शिक्षक को अपने अवलोकन लिखने के लिए एक प्रारूप दिया जाता है। इसमें विधि, स्थान, घटना और टिप्पणी होती हैं। शिक्षक को यह निर्देश दिया जाता है कि वे बच्चे के व्यवहार का अवश्य उल्लेख करें एवं अस्पष्ट तथा सामान्य टिप्पणियों से बचने के लिए अपने विवरणात्मक कथन दें। घटना से संबंधित उनके विवरण कथन के रूप में होने चाहिए, उदाहरणार्थ – पहले दिन की अनुपस्थिति के बारे में बिना किसी स्पष्टीकरण के आधा घंटा देर से आया, निर्देशों को नहीं मानना और अवज्ञा दिखाना।

लिखे जाने वाले क्षेत्र: सूचना के अंशों को लापरवाही से लिखना उद्देश्य को पूरा नहीं करता। चूँकि दिए गए प्रारूप में क्षेत्र स्पष्टता से अंकित होते हैं जिन पर अवलोकन किए जाने हैं। एक उपाख्यानक अभिलेख एक उद्देश्यपूर्ण अभिलेख होता है। उदाहरणार्थ – एक स्थानीय कारखाने के भ्रमण पर शिक्षार्थी के लेख से औद्योगिक कार्य में एक बच्चे की रूचि प्रदर्शित हो सकती है। एक लड़की की साहित्यिक पत्रिकाओं में रूचि उसकी साहित्यिक

पसंद से प्रदर्शित हो सकती है। एक शिक्षक अपने शिक्षार्थियों के जीवन में ऐसी कई घटनाओं को पा सकता है जिस पर यह एक नोट लिख सकता है। उदाहरणार्थ – एक रेडियो के प्रसारण पर एक लड़के की टिप्पणी एक उपाख्यानक अभिलेख के लिए एक अच्छी सामग्री है यदि वह वर्तमान इतिहास के पाठ का अध्ययन करने में रूचि रखता है। कुछ तात्कालिक वैज्ञानिक खोजों पर एक लड़की की टिप्पणी उसकी विज्ञान में रूचि को दिखा सकती है। एक उपाख्यानक अभिलेख सामाजिक एवं भावनात्मक व्यवहारों को समझने की विशेष रूचि है। जब छुट्टी के दिनों में सभी आनन्द उठा रहे हैं और शादियों का आनन्द ले रहे हों ऐसे में एक लड़का यदि अकेले बैठा पाया जाता है तो यह दिखाता है कि उसकी कुछ भावनात्मक समस्याएँ हैं।

अनुदैर्ध्य उपागमः केवल वही उपाख्यानक अभिलेख निर्देशक की कोई सहायता करते हैं जिनमें एक व्यक्ति के व्यवहारों का लम्बे समयावधि तक वर्णन रहता है। जो अनुदैर्ध्य उपाख्यानक अभिलेख नर्सरी से लेकर उच्च विद्यालय तक रखे जाते हैं वही बहुत उपयोगी होते हैं। उपाख्यानक अभिलेख फाइल में निरर्थक सामग्री नहीं रखनी चाहिए। समय–समय पर फाइल की जाँच की जानी चाहिए और असंगत सामग्री को हटा दिया जाना चाहिए। जीवन के सभी पहलुओं को धारण करने वाले उपाख्यानक अभिलेखों को रखा जाना चाहिए।

प्रत्येक शिक्षक को शिक्षार्थियों के बारे में घटनाओं को लिखने के लिए प्रारूप प्रदान किया जाना चाहिए। ध्यान में रखे जाने वाले कुछ मूलभूत विचारों को नीचे दिया गया है:

1) प्रारूप छोटे व अनौपचारिक होने चाहिए।
2) कुछ सार्थक घटना वाली रिपोर्ट होनी चाहिए। वर्णित घटना को एक समूह या व्यक्ति के अनुसार अंकित प्रवृत्ति को दिखाना चाहिए।
3) उपाख्यानक न केवल उच्च प्राप्तकर्त्ता या समस्या वाले शिक्षार्थी यद्यपि सभी शिक्षार्थियों के बारे में लिखे जाने चाहिए।
4) उपाख्यानक वास्तविक अवलोकनों की रिपोर्ट होना चाहिए और घटना के तुरंत बाद लिखा जाना चाहिए।
5) एक अकेली घटना का कोई मूल्य नहीं है।
6) व्यवहार के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों घटनाओं को लिखा जाना चाहिए।
7) हमें जानना चाहिए कि क्या देखना है और कहाँ देखना है तथा कैसे दर्ज करना है।

उपाख्यानक अभिलेखों का उपयोग

1) उपाख्यानक अभिलेख व्यक्ति के व्यक्तित्व के अभिलक्षणों, विभिन्न परिस्थितियों में प्रतिक्रियाओं, अध्ययन/व्यवसाय में अभिरूचियों और अंतर्वैयक्तिक सम्बन्धों के बारे में उपयोगी सूचना देते हैं। वे शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व की वास्तविक तस्वीर प्रदान करते हैं।
2) सामाजिक एवं भावनात्मक परिस्थितियों को दिखाने में उपाख्यानक अभिलेखों का विशेष मूल्य है।
3) उपाख्यानक अभिलेख उन क्षेत्रों में बहुत उपयोगी हैं जहाँ औपचारिक मापन बहुत कठिन है। उदाहरणार्थ – सामाजिकता, सामाजिक सजगता, सामाजिक व्यवहार, मनोवृत्तियों, वैयक्तिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति और कार्य व्यवहारों का निर्णय करने में।

4) एक स्वस्थ शिक्षक–शिष्य सम्बन्ध तभी स्थापित होता है जब विद्यालय द्वारा शिक्षकों को उपाख्यानक अभिलेख लिखने को कहा जाता है।

5) व्यवस्थित रूप से रखे गए उपाख्यानक अभिलेख परामर्शदाता को एक अत्यधिक मूल्यवान सूचना प्रदान करते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) किन्हीं तीन मान्यताओं को लिखें जिन्हें आपको शिक्षार्थी का उपाख्यानक अभिलेख रखते समय ध्यान में रखना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5.4.7 केस अध्ययन

एक केस अध्ययन को सभी उपलब्ध सूचना – सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आत्मकथात्मक, वातावरणीय, व्यावसायिक के संग्रह के रूप में परिभाषित किया जाता है जो एक मात्र व्यक्ति का वर्णन करने में सहायता करने का वादा करता है। एक केस अध्ययन, आँकड़ा संग्रह करने के सभी उपकरणों एवं तकनीकों का उपयोग कर एकत्रित की गई सूचना का एक समग्र संग्रह है। यह व्यक्ति की संपूर्णता में अध्ययन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तकनीक और सर्वोत्तम विधि है। इसका उद्देश्य है, कि जो कहना सकारात्मक और आत्मविश्वास के साथ कहना, जितना संभव हो सूचना के सभी स्रोत काम में लाए गए हों एवं ग्राहक के बारे में सभी प्रकार के आँकड़ों का संग्रह किया जा चुका हो। केस अध्ययन में, व्यक्ति के बारे में सूचना बहुत अधिक संगठित और संपूर्णता में जुड़ी हो ताकि जिसका अध्ययन किया जा रहा है उसे गतिशील रूप में देखा जाए ताकि वह जिस वातावरण में रह रहा है उसके साथ समायोजन करने का प्रयास करे। एक केस अध्ययन के पीछे मूल उद्देश्य व्यक्ति का संपूर्णता में अवलोकन करना है।

एक केस अध्ययन के पीछे सदैव एक वृहद विकासात्मक दृष्टिकोण होता है। परामर्शदाता न केवल समस्या के निदान में और उपयुक्त उपचार का सुझाव देने में रूचि रखता है बल्कि वह एक बेहतर समायोजन लाने के बारे में भी रूचि रखता है। एक विस्तृत केस अध्ययन का आयोजन जो व्यक्ति शोध का विषय है उसके लिए बेहतर समायोजन लाने के बारे में किया जाता है। परामर्शदाता व्यक्ति की उचित वृद्धि और विकास के संभाव्य तरीकों की योजना बनाने के लिए शक्तियों एवं कमजोरियों तथा योग्यताओं एवं अयोग्यताओं को देखता है।

एक केस अध्ययन में संग्रहित किए जाने वाले तथ्यः

एक व्यक्ति के बारे में केस अध्ययन निम्नलिखित विषयों पर मूलभूत सूचना प्रस्तुत करता है:

क) भौतिक, सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक वातावरण

ख) परिवार का इतिहास एवं वर्तमान स्थिति

ग) व्यक्ति का वैयक्तिक इतिहास

क) भौतिक, सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक वातावरण

भौतिक वातावरण पड़ोस को सम्मिलित करता है जिसमें व्यक्ति ने विकास किया है और अब रह रहा है, शहरी/ग्रामीण, कार्यरत/मध्यम वर्ग का परिवेश, अपने या किराए के घर में रहते हैं, बड़ा/छोटा मकान आदि। सामाजिक–आर्थिक वातावरण से तात्पर्य समुदाय जिसमें व्यक्ति उभरता है और पदार्थ की समृद्धि से संबद्ध इसकी स्थिति से है। क्या लोग जिनके बीच व्यक्ति रहता है वे किसान, व्यापारी या पेशेवर हैं? क्या समुदाय खेल के मैदान की सुविधा और युवा गतिविधियाँ प्रदान करता है?

सांस्कृतिक वातावरणः जिनके बीच व्यक्ति रहता है उनके जीवन का तरीका, आदर्श और दृष्टिकोण क्या है? क्या वे सुशिक्षित एवं समृद्ध हैं?

ख) परिवार का इतिहास एवं वर्तमान स्थिति

अध्ययन किए जाने वाले व्यक्ति के लक्षणों को समझने के लिए परिवार के बारे में बहुत-सी विविध सूचनाओं को संग्रहित किया जाता है।

परिवार के सदस्यों – पिता-माता, भाई और बहन के स्वास्थ्य एवं शरीर संरचना की स्थिति क्या है?

परिवार के सदस्यों का शैक्षणिक एवं व्यावसायिक स्थिति क्या है? उनकी विशेष योग्यताएँ एवं अयोग्यताएँ क्या हैं? क्या परिवार में सामंजस्य है या यह बिखरा हुआ परिवार है? क्या व्यक्ति उचित देखभाल एवं सुरक्षा पाता है? व्यक्ति के प्रति अभिभावकों की मनोवृत्ति – प्यार वाला, उदासीन, प्रबल या हस्तक्षेप वाली या कैसी है?

परिवार के सदस्यों का भावनात्मक समायोजन कैसा है? क्या वे चिड़चिड़े, खुशमिजाज, तुनकमिजाज, आक्रामक, डरपोक, संयमी या मुक्त विचार वाले हैं? क्या परिवार में कोई विवाद है?

परिवार की सामाजिक स्थिति क्या है? क्या यह एक प्रगतिशील परिवार है? क्या परिवार समाज में स्वीकृत या पृथक है? क्या यह बदनाम है या उच्च स्वाभिमानी है?

ग) व्यक्ति का वैयक्तिक इतिहास

व्यक्ति का अध्ययन उसी प्रकार किया जाता है जैसा परिवार के इतिहास के अंतर्गत किया गया।

व्यक्ति का शारीरिक स्वास्थ्यः क्या शारीरिक वृद्धि सामान्य है जो ऊँचाई और वजन के माप या चलने, बोलने और यौवन तक पहुँचने की आयु से दिखाई देती है? क्या कोई बीमारी या शारीरिक कमियाँ हैं, उदाहरणार्थ – श्रवण या दृश्य? क्या व्यक्ति देखने से सक्रिय, स्वस्थ या बीमार है? चिकित्सकीय जाँचों के क्या निष्कर्ष हैं?

व्यक्ति की योग्यताएँः क्या व्यक्ति ने बुद्धि परीक्षण कराया है? उसकी योग्यताएँ क्या हैं? क्या उसका मानसिक विकास सामान्य है या उसने निश्चित मनःशक्तियों को सामान्य की अपेक्षा पहले विकसित कर लिया है? क्या उसने विद्यालय स्तर पर अच्छा किया है या बुरा?

भावनात्मक विकासः क्या वह भावनात्मक रूप से परिपक्व या अस्थायी है? क्या वह प्रबल विरोध, इर्ष्या या प्यार दिखाता है? क्या वह अच्छे स्वभाव वाला और अति आत्मविश्वासी है?

सामाजिक विकासः परिवार में उसकी स्थिति क्या है? क्या वह अकेला बच्चा, कृपा दृष्टि वाला बच्चा या सबसे बड़ा बच्चा है? वह अपने सहोदरों के साथ कैसे रहता है? वह अपने सहपाठियों के साथ कैसे रहता है? क्या वह शर्मीला या संकोची है? क्या वह नेतृत्वकर्त्ता, अनुयायी या पृथक है? क्या वह दबंग है जो अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों को परेशान करने में करता है? क्या वह ऐसा आचरण दिखाता है जो उसके साथियों द्वारा नापसंद किया जाता है? क्या उसमें दूसरों का विरोध करने की आदत है?

आदर्श एवं मनोवृत्तिः क्या वह एक ऐसा व्यक्ति है जो आदर्शों में विश्वास करता है? वह परिष्कृत रूचि रखता है? क्या वह कभी अपराधी रहा है? क्या उसने कभी घर, विद्यालय और समुदाय में समस्याएँ उत्पन्न की है?

उपर्युक्त वर्णित कुछ विवरण हैं जिसे केस के निदान से पूर्व सुनिश्चित किया जाना चाहिए। अतः व्यक्ति के बारे में संग्रहित किए गए आँकड़ों का विश्लेषण संपूर्ण तस्वीर को ध्यान में रखकर करना चाहिए। पर्यावरण, परिवार और उसके अपने विकास के बारे में संग्रहित सभी सूचनाओं को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण व्यक्ति का एक आँकलन बनता है। एक स्पष्टीकरण दिया गया है कि उसे किसने बनाया है, वह क्या है और सुझाव दिए गए हैं कि इन निष्कर्षों के आलोक में सर्वाधिक उपयुक्त क्रिया क्या होनी चाहिए।

एक केस अध्ययन करने में कठिनाइयाँः एक केस अध्ययन करना आसान नहीं है। यह काफी जटिल एवं समय लेने वाली प्रक्रिया है। यदि व्यक्ति जो केस अध्ययन तैयार करता है कुशल नहीं है तो यह बहुत अधिक विषयनिष्ठ हो सकता है। प्रत्येक बच्चे के लिए एक पूर्ण केस अध्ययन तैयार करना भी कक्षाकक्ष में व्यवहार्य नहीं है। एक शिक्षक उन्हें पढ़ाने के लिए एक या दो केस ले सकते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) तीन मुख्य शीर्षकों की सूची बनाइए जिन पर आप एक केस अध्ययन तकनीक में सूचना संग्रह करना चाहेंगे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.4.8 संचयी अभिलेख

यह एक व्यक्तिगत शिक्षार्थी के आँकलन से संबद्ध सूचना का एक अभिलेख है। समय-समय पर विविध स्रोतों, तकनीकों, परीक्षणों, साक्षात्कारों, अवलोकनों, केस अध्ययन से प्राप्त सूचना को एक संचयी अभिलेख कार्ड पर एक सारांश के रूप में एकत्रित किया गया होता है, अतः इसका तब उपयोग किया जा सकता है जब शिक्षार्थी को शैक्षणिक या व्यावसायिक समस्या के समाधान के लिए परामर्श की आवश्यकता होती है।

संचयी अभिलेख को "शिक्षार्थियों के निर्देशन के लिए अनिवार्य सूचना का उपयोग करने, नत्थी करने और अभिलेख करने की एक विधि" के रूप में परिभाषित किया गया है। एक संचयी अभिलेख कार्ड निम्नलिखित बिन्दुओं पर सूचना की आपूर्ति करता हैः

क) **वैयक्तिकः** (i) नाम, (ii) जन्म तिथि, (iii) जन्म स्थान, (iv) लिंग, (v) रंग, और (vi) निवास।

ख) **घरः** (i) अभिभावक के नाम, (ii) अभिभावक के व्यवसाय, (iii) अभिभावक (जिन्दा या मृत), (iv) आर्थिक स्थिति, (v) सहोदरों की संख्या, बड़े या छोटे, और (vi) घर पर बोली जाने वाली भाषा।

ग) **परीक्षण स्कोरः** (i) सामान्य बुद्धि, (ii) उपलब्धि, (iii) अन्य परीक्षण स्कोर, और (iv) व्यक्तित्व के गुण।

घ) **विद्यालय की उपस्थितिः** (i) प्रत्येक वर्ष उपस्थिति, अनुपस्थिति के दिन, और (ii) तिथि के साथ विद्यालय में गए दिन।

ङ) **स्वास्थ्यः** (i) शारीरिक निःशक्तताओं का रिकार्ड, टीकाकरण (वैक्सीन) का रिकार्ड, बीमारियों का रिकार्ड।

च) **विविधः** (i) व्यावसायिक योजना, (ii) पाठ्यचर्या के अतिरिक्त गतिविधियाँ, (iii) अध्ययन के दौरान रोजगार, और (iv) परामर्शदाता की टिप्पणी।

यदि हम संचयी अभिलेख कार्ड में दर्ज सामग्रियों का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि एक केस अध्ययन में केवल ऐसी ही सामग्रियाँ सम्मिलित हैं या दर्ज रहती हैं। अमानकीकृत तकनीकों जैसे, जाँच सूची, प्रश्नावली, आत्मकथा के माध्यम से संग्रहित आँकड़ों का रिकार्ड कार्ड फाइल में जगह नहीं पाते हैं। यह अवश्य याद रखना चाहिए कि सूचना की रिकार्डिंग उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि सूचना का उपयोग।

संचयी अभिलेख की आवश्यकता और महत्वः शिक्षार्थियों के बारे में संचयी अभिलेख शिक्षकों, परामर्शदाताओं और प्रशासकों को उपयोगी सूचना प्रदान करते हैं। निर्देशन में संचयी अभिलेखों की आवश्यकता और महत्व को नीचे बताया गया हैः

निर्देशन में महत्व

i) निर्देशन के मूलभूत सिद्धान्त और पूर्व धारणाएँ व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखने पर केन्द्रित हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से कुछ मनोवैज्ञानिक लक्षणों, गुणों या विशेषताओं में भिन्न होते हैं। उदाहरणार्थ कोई दो व्यक्ति एक समान नहीं होते हैं। वे एक-दूसरे से मनोवृत्तियों, अभिरूचियों और योग्यताओं में भिन्न होते हैं। संचयी अभिलेख ऐसी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रकट करती है और विविध स्तरों पर शिक्षार्थियों के विकास के लिए आवश्यक वृत्तिक सहायता की मात्रा और प्रकृति को प्रदर्शित करते हैं।

ii) संचयी अभिलेख व्यक्तिगत शिक्षार्थी के शैक्षणिक विकास का स्थायी इतिहास है। यह उनकी उपस्थिति, स्वास्थ्य, उपलब्धि और विद्यालयी जीवन के अन्य विविध पहलुओं को प्रदर्शित करता है। चूँकि यह शिक्षार्थी विशेष के भविष्य की आवश्यकताओं का विश्लेषण करने में उपयोगी है अतः उचित शैक्षणिक एवं व्यावसायिक निर्देशन उनकी आवश्यकताओं के आधार पर दिया जा सकता है। उदाहरणार्थ – यदि यह शिक्षार्थी के शारीरिक विकास में कमजोरी को प्रदर्शित करता है तो उन कमियों को दूर करने के कदम सुझाए जा सकते हैं।

शिक्षण में महत्व

i) एक शिक्षार्थी का व्यक्तिगत संचयी अभिलेख, यदि उसकी उपलब्धियाँ उसकी मानसिक योग्यताओं के अनुपात में है तो इसे प्रदर्शित करता है। यदि शिक्षार्थी की उपलब्धियाँ कम हैं तो उसे निर्देशन दिया जा सकता है कि उसकी कमी के उपचार के लिए क्या कदम उठाया जाना चाहिए।

ii) विभिन्न शिक्षार्थियों का संचयी अभिलेख, शैक्षणिक अभिरूचियों एवं मानसिक योग्यताओं के अनुरूप शिक्षार्थियों को वर्गीकृत करने में शिक्षक की सहायता करता है।

iii) एक कक्षा के विभिन्न शिक्षार्थियों का संचयी अभिलेख, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को समझने में नए शिक्षक की सहायता करता है।

iv) एक व्यवहार की समस्या या एक शैक्षणिक समस्या का विश्लेषण करने के ये उपचारी उपकरण हैं। उदाहरणार्थ – एक शिक्षार्थी शैक्षणिक निष्पादन में पीछे क्यों है? उसके पिछड़ेपन को दूर करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं?

v) संचयी अभिलेख शिक्षार्थियों के बारे में शिक्षक को बताते हैं कि किस शिक्षार्थी को व्यक्तिगत ध्यान की आवश्यकता है।

vi) संचयी अभिलेख शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत रिपोर्ट लिखने में शिक्षकों की सहायता करता है और प्रधानाचार्य की सहायता अधिक वस्तुनिष्ठता से चरित्र प्रमाणपत्र लिखने में करता है।

vii) शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को चिह्नित कर सकते हैं और तदनुसार शिक्षण को समायोजित कर सकते हैं।

viii) केस अध्ययन तैयार करने में संचयी अभिलेख शिक्षकों के लिए बहुत उपयोगी हैं क्योंकि संग्रहित सामग्रियों में बहुत समानता होती है।

प्रशासकों के लिए महत्व

संचयी अभिलेख एक शिक्षार्थी के अपराधी व्यवहार को समझने में परिवीक्षा अधिकारी एवं बाल न्यायालयों को पर्याप्त सूचना प्रदान करते हैं।

शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं के लिए उन कारणों से संचयी अभिलेख रखना आवश्यक होता है जिन कारणों से एक चिकित्सक संचयी अभिलेख रखता है। एक लंबी अवधि तक रखे गए अभिलेख ग्राहक की वृद्धि एवं विकृति की कहानी कहते हैं।

एक अच्छे संचयी अभिलेख की विशेषताएँ

एक अच्छे संचयी अभिलेख की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1) एकत्रित की गई सूचना पूर्ण, समग्र और पर्याप्त होनी चाहिए ताकि वैध अनुमान लगाए जा सके। प्रगति रिपोर्ट की अपेक्षा इसे अधिक समग्र होना चाहिए। चूँकि अभिलेख एक शिक्षार्थी की शैक्षणिक वृद्धि का एक स्थायी इतिहास होता है अतः इसे एक शिक्षक या एक निर्देशक के लिए आवश्यक सभी प्रकार की सार्थक सूचना प्रदान करनी चाहिए। उदाहरणार्थ – इसे व्यावसायिक निर्देशन में शिक्षार्थी की आवश्यक व्यावसायिक योजनाओं, व्यावसायिक पसंदों, संपत्तियों एवं दायित्वों को प्रदर्शित करना चाहिए।

2) उल्लेखित सूचना वैध एवं सत्य होनी चाहिए। दूसरों से प्राप्त किसी सूचना की सीमित वैधता एवं विश्वसनीयता हो सकती है। संचयी अभिलेख का एक समग्र मॉडल तैयार करने से पूर्व, उदाहरणार्थ – उच्च विद्यालय का एक शिक्षार्थी जिसे नौकरी की आवश्यकता है के लिए यह निर्णय करना चाहिए कि एक ऐसी अनुसूची के लिए सामग्री आवश्यक क्या है। मापन के अन्य उपकरणों के समान, एक संचयी अभिलेख केवल तभी वैध हो सकता है जब यह वही मापता है जो मापना वांछित है।

3) सूचना को विश्वसनीय होने के लिए शिक्षकों द्वारा संग्रहित और तत्पश्चात् संपादित होना चाहिए। संचयी अभिलेख की विश्वसनीयता शिक्षार्थी की वृद्धि के विभिन्न पहलुओं पर सावधानी के साथ सूचना संग्रह एवं समायोजन पर निर्भर करती है। अतः संग्रहित सभी सूचनाओं को शिक्षार्थी के वैयक्तिक संपर्क के परिणाम के रूप में आना चाहिए न केवल एक शिक्षक बल्कि बहुत से शिक्षकों द्वारा जो शिक्षार्थी के साथ निकट संपर्क में आते हैं। दूसरों से प्राप्त सूचना को सत्यापित किया जाना चाहिए।

4) एक संचयी अभिलेख को समय–समय पर पुनः मूल्यांकित किया जाना चाहिए।

5) एक संचयी अभिलेख को वैकल्पिक और वैयक्तिक मतों एवं पूर्वधारणाओं से मुक्त होना चाहिए। यदि आँकड़ों के संग्रह में पूर्वाग्रह, पसंद और नापसंद आते हैं तो अभिलेख अविश्वसनीय हो जाएगा।

6) इसे उपयोगी होना चाहिए। एक संचयी अभिलेख कार्ड, फोल्डर या बुकलेट जैसा हो सकता है। फोल्डर वाले संचयी अभिलेख बहुत अधिक लोकप्रिय हैं क्योंकि वे शिक्षार्थी के बारे में समग्र सूचना को जोड़ने की स्वीकृति देते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5) शिक्षण में संचयी अभिलेखों के महत्व पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.4.9 साक्षात्कार

एक साक्षात्कार एक उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप है। जिन उद्देश्यों के लिए साक्षात्कार आयोजित किए जाते हैं वे परिचयात्मक, तथ्य पता लगाने वाला, मूल्यांकनात्मक, सूचनात्मक और उपचारात्मक हैं। अन्य लक्षण साक्षात्कारकर्ता और साक्षात्कार देने वाले के बीच सम्बन्ध हैं। इस अवसर का उपयोग एक मित्रतापूर्ण सामान्य बातचीत के लिए किया जाता है। साक्षात्कार देने वाले को स्वच्छंद वातावरण के साथ विश्वास एवं स्वतंत्रता के साथ बात करने की स्वीकृति देनी चाहिए।

साक्षात्कार के विभिन्न प्रकार

साक्षात्कार उद्देश्य के संदर्भ में भिन्न–भिन्न होते हैं जिसे ध्यान में रखा जाता है। यदि उद्देश्य एक पद के लिए उम्मीदवार का चयन करना है तो यह एक रोजगार साक्षात्कार है, किन्तु यदि उद्देश्य कुछ तथ्य एकत्रित करना या उन्हें सत्यापित करना है तो इसे तथ्य पता लगाने वाला साक्षात्कार कहा जाएगा। अतः साक्षात्कारों को उद्देश्य के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। साक्षात्कारों को साक्षात्कारकर्त्ता एवं साक्षात्कार देने वाले के बीच सम्बन्धों की प्रकृति के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है। यदि साक्षात्कार में प्रभावी तस्वीर परामर्शदाता है तो यह एक परामर्शदाता केन्द्रित साक्षात्कार है और यदि यह तस्वीर ग्राहक है तो साक्षात्कार ग्राहक केन्द्रित है। साक्षात्कार के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

1) **रोजगार साक्षात्कार:** ऐसे साक्षात्कार का उद्देश्य नौकरी के लिए एक व्यक्ति की उपयुक्तता का आँकलन करना होता है। साक्षात्कार लेने वाले बहुत अधिक बात करते हैं और साक्षात्कार देने वाला बहुत थोड़ा। वह सामान्यतः पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देता है।

2) **तथ्य प्राप्ति हेतु साक्षात्कार:** इस साक्षात्कार का उद्देश्य अन्य स्रोतों से संग्रहित आँकड़ों एवं तथ्यों को सत्यापित करना है।

3) **निदानात्मक साक्षात्कार:** इस साक्षात्कार का उद्देश्य निराकरण है। साक्षात्कारकर्त्ता द्वारा साक्षात्कार देने वाले की समस्या का निदान करने एवं उनके लक्षणों का पता लगाने का एक प्रयास किया जाता है। समस्या के समाधान में साक्षात्कार देने वाले की सहायता के लिए आवश्यक सूचना संग्रहित की जाती है।

4) **परामर्श साक्षात्कार:** इस साक्षात्कार का उद्देश्य साक्षात्कार देने वाले को एक अतर्दृष्टि, एक सुझाव या परामर्श प्रदान करना है। परामर्श सत्र सूचना संग्रहण के कार्य के साथ प्रारंभ होता है और निर्देशन के साथ आगे बढ़ता है तथा अंततः समस्या के मनोवैज्ञानिक उपचार के साथ अंत होता है।

5) **समूह बनाम व्यक्तिगत साक्षात्कार:** जब कुछ लोग समूह में साक्षात्कार देते हैं तो ऐसे साक्षात्कार को एक समूह साक्षात्कार के रूप में जाना जाता है किंतु मूलतः सभी समूह साक्षात्कार व्यक्तिगत साक्षात्कार हैं क्योंकि यह समूह नहीं है ये साक्षात्कार देने वाले हैं। एक समूह साक्षात्कार के पीछे उद्देश्य सूचना संग्रह करना और समूह द्वारा सामना की जा रही समस्याओं को जानना है। व्यक्तिगत साक्षात्कार में व्यक्ति द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं पर अवधान केन्द्रित होता है।

   कार्ल रोजर्स व्यक्तिगत साक्षात्कार के बारे में एक भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। वे कहते हैं कि एक व्यक्तिगत साक्षात्कार में व्यक्ति विशेष द्वारा सामना की जाने वाली समस्या नहीं होती है जो केन्द्र में आती है। लक्ष्य व्यक्ति स्वयं होता है। व्यक्तिगत साक्षात्कार का लक्ष्य एक समस्या का समाधान करना नहीं है, बल्कि साक्षात्कार देने वाले को

उन्नत होने के लिए सहायता करना ताकि वह वर्तमान एवं समस्याओं का सामना कर सके जो भविष्य में एक बेहतर एकीकृत तरीके से उठ सकते हैं।

6) **सत्तावादी बनाम ग़ैर–सत्तावादी प्रकारः** साक्षात्कार के सत्तावादी प्रकार में ग्राहक और उसकी समस्याओं को मिला दिया जाता है और साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता अपनी उन्नत स्थिति के कारण प्रभावी रहता है। ग़ैर-सत्तावादी, सत्तावादी भूमिका को अस्वीकार करता है। साक्षात्कार देने वाला एक सत्ताधारी मानव के रूप में साक्षात्कारकर्त्ता का आदर करता है किंतु साक्षात्कारकर्त्ता सत्ताधारी जैसा व्यवहार नहीं करता है। वह ग्राहक की भावनाओं को स्वीकार करता है और उन्हें अस्वीकार नहीं करता है। साक्षात्कार के दौरान वह कई प्रकार की तकनीकों जैसे सुझाव, अनुनय, परामर्श, आश्वासन, व्याख्या और सूचना देना आदि का उपयोग करता है।

7) **निर्देशात्मक बनाम अनिर्देशात्मक साक्षात्कारः** निर्देशात्मक साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता निर्देश देता है, परामर्श, सुझाव, अनुनय या धमकी के माध्यम से रास्ता दिखाता है। किन्तु एक अनिर्देशात्मक साक्षात्कार में यह मान लिया जाता है कि साक्षात्कार देने वाले में वृद्धि एवं विकास करने की योग्यता है। उसे अपनी भावनाओं एवं भावनाओं को व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। साक्षात्कारकर्त्ता ग्राहक के अतीत में झाँकने की कोशिश नहीं करता है, कोई सुझाव नहीं देता है। वह ग्राहक को शिक्षित या बदलने की कोशिश नहीं करता है।

8) **संरचित बनाम असंरचित साक्षात्कारः** संरचित साक्षात्कार में प्रश्नों का निश्चित समुच्चय, पूर्व निर्धारित होता है। साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कार में स्वयं को पूर्व निर्धारित प्रश्नों में सीमित रखता है। संरचित साक्षात्कार में निश्चित प्रश्नों को पूछा जाता है। एक असंरचित साक्षात्कार में ऐसी कोई बाध्यता नहीं होती है। साक्षात्कारकर्त्ता अपने विचारों को व्यक्त करने को स्वतंत्र होता है। चर्चा का विषय पूर्व निर्धारित नहीं होता है। असंरचित साक्षात्कार कभी–कभी सूचना प्रदान करता है, यह सतही हो सकता है किन्तु व्याख्या करते समय यह अत्यंत उपयोगी होता है।

परामर्श की स्थिति में साक्षात्कार के सामान्य सिद्धान्त

निम्नलिखित दिशा निर्देश एक साक्षात्कार को सफल बनाते हैंः

1) साक्षात्कार की स्थिति में सुनने का अच्छा माहौल होना चाहिए जिससे अच्छे अनुभव एवं प्रशिक्षण वालों को सुना जा सके।

2) परामर्श लेने वाले को साक्षात्कार एवं परामर्श की आवश्यकता का अनुभव करना चाहिए।

3) परामर्शदाता के पास परामर्श प्रारंभ करने से पूर्व ग्राहक के बारे में सभी सार्थक आँकड़ें होने चाहिए।

4) परामर्शदाता एवं परामर्श लेने वाले के बीच सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए। यह आपसी विश्वास के व्यक्तिगत सम्बन्ध का एक प्रकार है और विश्वास एवं सुरक्षा की भावनाओं पर आधारित सम्मान है।

5) साक्षात्कार हार्दिक एवं सुखद अभिवादन के साथ प्रारंभ होना चाहिए और यह प्रदर्शित नहीं करना चाहिए कि एक का दूसरे के ऊपर वर्चस्व है।

6) चर्चा मुद्दों से प्रतिबंधित होनी चाहिए।

7) जब परामर्श लेने वाला स्वयं को व्यक्त करता है तो उसे स्वीकार किया जाना चाहिए।

परामर्शदाता विरोध कर एवं लज्जित कर परामर्श लेने वाले से कुछ भी ग्रहण नहीं करेगा।

8) साक्षात्कार का लक्ष्य परामर्श लेने वाले की समस्या की अंतर्दृष्टि प्राप्त करने एवं समाधान तक पहुँचने पर होना चाहिए।

9) परामर्श लेने वाले को निर्णय लेने में आगे आने देने की अनुमति होनी चाहिए।

10) साक्षात्कार का समापन एक रचनात्मक टिप्पणी के साथ होना चाहिए।

साक्षात्कार के लाभ

साक्षात्कार एक अमानकीकृत तकनीक है जो व्यक्ति के अध्ययन के लिए प्रयुक्त किया जाता है। परामर्श में सामान्यतः साक्षात्कार प्रयुक्त होता है। यह एक तकनीक है जिसके बिना परामर्श संभव नहीं है। सूचना प्राप्त करने, एक समूह को सूचना देने, एक नए कर्मचारी के चयन और एक समस्या के समाधान में व्यक्ति की सहायता करने में यह एक मूल्यवान तकनीक है।

निर्देशन एवं परामर्श के एक तकनीक के रूप में साक्षात्कार के निम्नलिखित लाभ हैं:

1) यह निर्देशन में विस्तृत रूप से प्रयुक्त एक तकनीक है क्योंकि इसके निश्चित लाभ हैं जो निर्देशन के अन्य तकनीकों द्वारा नहीं धारण किए जाते हैं। उदाहरणार्थ – इस तकनीक के उपयोग से कम समय में आसानी से व्यक्तिगत आँकड़ों को संग्रहित किया जा सकता है।

2) यह बहुत लचीला होता है। विभिन्न पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के साथ और लगभग सभी परिस्थितियों में यह उपयोगी है।

3) यह विविध उद्देश्यों को पूरा करता है। आप अपना उद्देश्य निर्धारित कर सकते हैं और उस उद्देश्य के लिए एक साक्षात्कार कर सकते हैं।

4) इसका एक बड़ा निदानात्मक मूल्य है। साक्षात्कार, साक्षात्कारकर्त्ता और साक्षात्कार देने वाले के बीच एक मुखाभिमुख सम्बन्ध स्थापित करता है। ग्राहक द्वारा सामना किए जाने वाले समस्या में प्रत्यक्ष सम्बन्ध एक बड़ी अंतर्दृष्टि देता है।

5) एक समस्या के निदान में साक्षात्कार सहायक है। ग्राहक द्वारा सामना की जाने वाली एक समस्या के कारणों को प्रकट करने में यह बहुत सहायक है। अतः कुछ मनोवैज्ञानिक निदान एवं उपचार के लिए साक्षात्कार को एक बहुत उपयोगी तकनीक मानते हैं।

6) मुखाभिमुख संपर्क ग्राहक के व्यक्तित्व के बारे में बहुत उपयोगी संकेत देते हैं। चेहरे की अभिव्यक्ति, चेष्टा, भंगिमा अर्थ संप्रेषित करते हैं और अप्रत्यक्षतः भावनाओं एवं मनोवृत्तियों को प्रकट करते हैं।

7) साक्षात्कार ग्राहक के लिए भी उपयोगी है क्योंकि यह उन्हें समस्या एवं अपने बारे में सोचने में सक्षम बनाता है। यह सर्वाधिक उपयोगी परिस्थिति है जिसमें ग्राहक स्वयं अपनी योग्यताओं, कौशलों, अभिरूचियों और कार्य के संसार, इसकी शुरुआत और उनकी आवश्यकताओं को भी एक बेहतर समझ देता है।

8) साक्षात्कार बातचीत के माध्यम से विचारों एवं मनोवृत्तियों को विनिमय करने में ग्राहक और परामर्शदाता को एक पसंद प्रदान करता है।

एक तकनीक के रूप में साक्षात्कार की सीमाएँ

1) यह एक विषयनिष्ठ तकनीक है। ग्राहक के बारे में आँकड़ों का संग्रह करने में वस्तुनिष्ठता का अभाव होता है। साक्षात्कारकर्त्ता के पूर्वाग्रह एवं पूर्व धारणाएँ साक्षात्कार के माध्यम से संग्रहित आँकड़ों की व्याख्या में आ जाते हैं।

2) व्यक्तिगत पूर्वाग्रह साक्षात्कार को कम विश्वसनीय एवं वैध बनाते हैं।

3) एक साक्षात्कार के परिणामों की व्याख्या करना बहुत कठिन है।

4) एक साक्षात्कार की उपयोगिता सीमित होती है। एक साक्षात्कार की सफलता साक्षात्कारकर्त्ता के व्यक्तिगत गुणों, साक्षात्कार के लिए उसकी तैयारी और उसके साक्षात्कार के तरीके पर निर्भर करता है। यदि साक्षात्कारकर्त्ता एकाधिकारपूर्वक बात करता है या ग्राहक जो कहता उसे धैर्यपूर्वक नहीं सुनता है तो साक्षात्कार अपना मूल्य खो देता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

6) किसी पाँच अमानकीकृत तकनीकों की सूची बनाएँ जिन्हें आप अपने विद्यालय में प्रयोग करना चाहेंगे।

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 मानकीकृत तकनीक

मानकीकृत परीक्षणों के चार प्रकार हैं। इनमें उपलब्धि, अभिक्षमता, अभिरूचि और व्यक्तित्व परीक्षण सम्मिलित हैं। इन श्रेणियों में कुछ अतिव्याप्ति विशेषतः रूचि और व्यक्तित्व में है। अब हम इनका एक-एक कर परीक्षण करते हैं।

5.5.1 अभिक्षमता परीक्षण

अभिक्षमता को एक गुण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक विशिष्ट क्षेत्र या एक दिए गए क्षेत्र में निष्पादन के लिए आवश्यक अधिगम अर्जित करने के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को चित्रित करता है। यह एक अंतर्निहित या वास्तविक योग्यता का पूर्वानुमान करता है जो अधिगम या अन्य अनुभवों के माध्यम से अधिकतम विकसित किया जा सकता है। फिर भी एक निश्चित बिन्दु से बाहर यहाँ तक कि अधिगम से भी इसे फैलाया नहीं जा सकता। सिद्धान्त में, एक अभिक्षमता परीक्षण दी गई गतिविधि में प्राप्त करने या सीखने में किसी की शक्ति को मापता है।

अभिक्षमता परीक्षण परामर्शदाताओं एवं अन्य द्वारा सशक्त रूप में उपयोग किया जा सकता है क्योंकि (1) वे संभावित योग्यताओं को पहचान सकते हैं जिसके विषय में व्यक्ति अनभिज्ञ

है; (2) वे व्यक्ति की विशिष्ट या संभावित योग्यताओं के विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं; (3) वे शैक्षिक और रोजगार के लिए निर्णयों या अन्य प्रतियोगी विकल्पों में अन्य चयन करने में व्यक्ति की सहायता हेतु सूचना प्रदान कर सकते हैं; (4) वे व्यक्ति के शैक्षिक या व्यावसायिक सफलता के स्तर की भविष्यवाणी करने में सहायता कर सकते हैं जिसे व्यक्ति स्वीकार कर सकता है; तथा (5) वे विकास तथा अन्य शैक्षिक प्रयोजनों हेतु समान अभिवृत्ति वाले व्यक्तियों के समूहन में उपयोगी हो सकते हैं।

विशेष अभिक्षमता परीक्षण

आपने लिपिकीय अभिक्षमता परीक्षण, आंकिक योग्यता परीक्षण आदि के विषय में सुना या देखा होगा। विशेष अभिक्षमता परीक्षण सामान्यतः उनसे संदर्भित हैं जो एक विशिष्ट पेशा या अन्य प्रकार की गतिविधि में निष्पादन या दक्षता अर्जित करने की व्यक्ति की संभावित योग्यता के मापन की चेष्टा करता है। वे परीक्षण जो विशेष अभिक्षमता को मापते हैं कभी-कभी एकल अभिक्षमता परीक्षण के रूप में संदर्भित किए जाते हैं क्योंकि वे केवल एक विशिष्ट अभिक्षमता के मापन को सुनिश्चित करते हैं। परामर्शदाता प्रायः अधिकांशतः अभियांत्रिकी, लिपिकीय या कलात्मक योग्यताओं के क्षेत्र में एक अभिक्षमता को मापने हेतु मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग करते हैं। एकल अभिक्षमता परीक्षणों को विभिन्न स्नातक एवं व्यावसायिक विद्यालयों में उपयोग हेतु भी विकसित किया गया है। अभिक्षमता परीक्षण विद्यालय के विषय विशेष हेतु भी उपलब्ध हैं।

व्यावसायिक अभिक्षमता परीक्षण

विशिष्टतः बहुद्देशीय अभिक्षमता परीक्षणों में उपपरीक्षणों की एक श्रृंखला होती है जो व्यवसाय या व्यवसायों की श्रृंखला से संबद्ध गतिविधियों के विविध संयोजनों से संबद्ध होती है। सामान्यतः प्रयुक्त बहुद्देशीय अभिक्षमता बैटरियाँ हैं – सामान्य अभिक्षमता परीक्षण बैटरी, विशिष्ट अभिक्षमता बैटरी, फ्लैगन अभिक्षमता वर्गीकरण परीक्षण और शैक्षणिक प्रतिज्ञा परीक्षण।

शैक्षिक अभिक्षमता परीक्षण

शैक्षिक अभिक्षमता परीक्षण शैक्षणिक परिस्थितियों में किसी के निष्पादन की क्षमता को मापता है। ऐसे परीक्षण वे हैं जो एस.ए.टी. और पी.एस.ए.टी. बैटरियों को समाविष्ट करते हैं जिनमें उच्चतर शैक्षणिक स्तरों पर शैक्षणिक निष्पादन की भविष्यवाणी करने में अधिक विशिष्टता होती है। फिर भी एक सर्वाधिक उपयुक्त स्तर शैक्षणिक उपलब्धि होगा क्योंकि जो स्वाभाविक योग्यता की अपेक्षा अतीत के अधिगम के आधार पर भविष्य की शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी करता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

7) तीन प्रकार की अभिक्षमता परीक्षणों को लिखिए।

.....

.....

.....

5.5.2 उपलब्धि परीक्षण

आपने इन परीक्षणों का उपयोग विद्यालयी विषयों में शिक्षार्थियों के निष्पादन के आँकलन में किया है। सभी इकाई, सेमेस्टर या सत्रीय परीक्षा जाँच केवल उपलब्धि परीक्षण हैं। ये परीक्षण उन कौशलों एवं योग्यताओं पर केन्द्रित हैं जो परंपरागत रूप से गतिविधि में पढ़ाए जाते हैं। इसलिए उपलब्धि परीक्षणों को अधिकांश विद्यालयों में विशिष्ट पाठ्यचर्या क्षेत्रों जैसे गणित, अंग्रेजी आदि में शिक्षार्थी के अधिगम स्तर को मापने के एक उपकरण के रूप में परिभाषित किया गया है।

उपलब्धि परीक्षणों का उपयोग सामान्यतः (i) अधिगम की मात्रा, (ii) अधिगम की दर, (iii) अन्य क्षेत्रों में स्वयं की उपलब्धि के साथ या अन्यों के साथ तुलना, (iv) उपक्षेत्रों में अधिगम के स्तर तथा (v) एक विषय क्षेत्र में शक्तियों एवं कमजोरियों को मापने में किया जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

8) गतिविधि में उपलब्धि परीक्षणों के महत्व एवं आवश्यकता को संक्षेप में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5.5.3 अभिरूचि मापनी

आपने अपनी कक्षा में अवश्य अवलोकन किया होगा कि कुछ शिक्षार्थी गणित में अधिक लगाव दिखाते हैं, जबकि कुछ अन्य कम्प्यूटर, शैक्षिक गतिविधियों, पेंटिंग आदि में। अभिरूचि निश्चित वस्तुओं, गतिविधियों या अनुभवों के प्रति एक व्यवहार का अनुकूलन है। यह हमारी पसंदों, नापसंदों या आकर्षणों एवं विकर्षणों की एक अभिव्यक्ति है। एक व्यक्ति बहुत से विकल्पों में से सर्वाधिक स्वीकार्य, उपयुक्त गतिविधियों को चुनता है। बाद में प्रस्तावित उद्देश्यों, गतिविधियों आदि की ओर जाता है और बाद में इन चयनित गतिविधियों में से संतुष्टि, सफलता और खुशी उत्पन्न करता है। अभिरूचियाँ सामान्य योग्यता, विशेष अभिरूचियों एवं मूल्यों से विविध तरीकों से संबद्ध हैं। भाषाई और वैज्ञानिक अभिरूचियाँ सकारात्मक रूप से बुद्धि से सहसंबद्ध हैं, तकनीकी अभिरूचियाँ यांत्रिकी अभिरूचि से संबद्ध हैं और व्यापारिक अभिरूचियाँ तनावयुक्त सामग्री जैसे सैद्धान्तिक, सामाजिक या सौन्दर्य मूल्यों आदि के विरोध से संबद्ध हैं।

अभिरूचि परीक्षण कुछ उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किया जाता हैः

i) शिक्षार्थियों की प्राथमिकताओं एवं विकर्षण से संबद्ध सूचना शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं को प्रदान करना जो शिक्षार्थियों एवं उनकी समस्याओं को बेहतर समझ अर्जित करने में उनकी सहायता करेगी।

ii) विविध पाठ्यक्रमों एवं जीवन वृत्तियों के संदर्भ में शिक्षार्थियों की अभिरूचियों को पहचानना एवं स्पष्ट करने में सहायता करना और उनकी अभिरूचियों के संगत कार्य एवं अनुभवों को चुनने में सहायता करना।

iii) शिक्षार्थियों की अभिरूचियों की तीव्रता के प्रकारों को जानने में शिक्षकों, परामर्शदाताओं एवं अभिभावकों को समर्थ बनाना और उनकी अभिरूचियों के संगत उनके शैक्षणिक एवं व्यावसायिक योजनाओं को तैयार करने में उनकी सहायता करना।

iv) उपयुक्त दिशा में युवाओं की ऊर्जा को अग्रसर करने में सहायता करना।

v) सही कार्य के लिए सही व्यक्ति के चयन में सहायता करना और इस प्रकार व्यक्तियों के जीवन में कुंठा, दुख और निराशा से बचाना और व्यक्ति के उत्पादी क्षमता को बढ़ाना।

अभिरूचि मापन की विधियाँ

हम व्यक्ति की अभिरूचियों को निम्नलिखित विधियों से माप सकते हैं:

i) अवलोकन: हम प्रत्यक्ष अभिरूचियों का अवलोकन कर सकते हैं। एक व्यक्ति वास्तव में जो करता है क्या वह उसकी अभिरूचियों का एक अच्छा निहितार्थ है।

ii) परामर्श प्राप्तकर्त्ता के उद्‌बोधन: एक विषय, गतिविधि, वस्तु या व्यवसाय में व्यक्ति की व्यक्त अभिरूचियों को जानकर हम अभिरूचियों को जान सकते हैं। शाब्दिक दावे उनकी अभिरूचियों का एक प्रदर्शक हो सकते हैं।

iii) उपकरणों का उपयोग: हम वास्तविक स्थिति में Michigari Vocabulary Test जैसे उपकरणों की सहायता से अभिरूचियों का आँकलन कर सकते हैं कि यदि व्यक्ति वास्तव में कुछ चीजों में रूचि रखता है तो वह उस क्षेत्र में सम्मिलित शब्दावली को जानेगा।

iv) मापनियों का उपयोग: व्यवसायों और गतिविधियों की सूचियों पर एक व्यक्ति के उत्तर से हम उसकी अभिरूचि के तरीकों का निर्धारण कर सकते हैं। अभिरूचि की तालिका शिक्षार्थी की प्राथमिकताओं के बारे में सूचना प्रदान करती है जो शाब्दिक रूप से दावा की अभिरूचियों की अपेक्षा अधिक स्थायी हैं। शाब्दिक रूप से दावा की गई अभिरूचियाँ व्यवसाय के बारे में शिक्षार्थी के गलत और सीमित ज्ञान से प्रायः बहुत प्रभावित होती हैं। यह तकनीक अभिरूचियों के आँकलन करने के सर्वाधिक सर्वमान्य से कहीं अधिक सर्वमान्य है और सामान्यतः प्रयुक्त होती है।

अभिरूचि मापनियों के लाभ

अभिरूचि की मापनियाँ कई तरह से उपयोगी हैं:

i) ये व्यावसायिक परामर्श के लिए अपनाई गई होती हैं। शिक्षार्थी अपेक्षा करता है कि उसकी अभिरूचियों पर विचार किया जाए। जब भी व्याख्या दी जाए वह विचारणीय प्रभाव रखे क्योंकि शिक्षार्थी देख सकता है कि वह अपने आपको एक दर्पण में देख रहा है, कि उसने जो कहा है वह उसका केवल एक विश्लेषण प्राप्त कर रहा है।

ii) वे परामर्शदाता के लिए भी उपयोगी हैं क्योंकि वे भावनात्मक अभिप्राय से कम युक्त होते हैं। शिक्षार्थी अभिरूचि स्कोरों पर परामर्शदाता से खुली बहस कर सकता है।

iii) परामर्श लेने वाले के लिए भी यह उपयोगी युक्ति है – शिक्षार्थी अपनी अभिरूचियों को प्रकट करने पर ध्यान नहीं देते हैं और अपने स्कोरों की रिपोर्ट रखने के इच्छुक होते

हैं। स्कोरों की व्याख्या करने का वादा करना शिक्षार्थियों को परामर्शदाता के कार्यालय में लुभाने की एक अच्छी और दोस्ताना चाल होती है।

iv) ये सस्ती हैं: ये एक समूह को दी जा सकती हैं, प्रोफाइलों की व्याख्या को समूह परिचर्चा में ले जाया जा सकता है।

v) ये आगे या तो जीवनवृत्तियों के समूह अध्ययन या व्यक्तिगत परामर्श के सर्वोत्तम प्राथमिक सूचना प्रदान करती हैं।

vi) ये शिक्षार्थियों की अन्य बहुत-सी समस्याओं का सामना करने में परामर्शदाता की सहायता करते हैं।

अभिरूचि मापनियों की सीमाएँ

अभिरूचि मापनियों में निश्चित सीमाएँ पाई जाती हैं:

i) बहुत-से शिक्षार्थी अभिरूचि मापनियों पर दृढ़ पसंदों, नापसंदों या स्पष्टतः परिभाषित प्राथमिकताओं को अपने उत्तरों के माध्यम से दिखाने में असफल होते हैं।

ii) मापनियों की वैधता केवल उन व्यक्तियों के लिए हो सकती है जिनकी पसंद दीर्घ और काफी विविध हों जो वस्तु के अनुभवों के साथ उन्हें प्रदान की गई हों जो उन्हें मापनियों में प्रत्येक सामग्री द्वारा प्रस्तुत विकल्पों के बीच से सुनने में उन्हें समर्थ करेगी। इस प्रकार ये तालिकाएँ अपरिपक्व शिक्षार्थियों की अपेक्षा परिपक्व शिक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी हैं।

iii) व्यावसायिक पसंद या सफलता की भविष्यवाणी अकेले मापनियों द्वारा दिखाए गए स्पष्टतः परिभाषित मानदंडों के आधार पर नहीं की जा सकती है। योग्यता, प्रशिक्षण और प्रशिक्षण के अवसर सभी पर विचार करने की आवश्यकता है। अभिरूचि परीक्षण परिणामों को अत्यंत महत्व नहीं दिया जा सकता है।

अभिरूचियों का आँकलन करना

अभिरूचियों का आँकलन करने का एक तरीका है शिक्षार्थियों से पूछना कि वे क्या करना चाहते हैं। दूसरा तरीका है गतिविधियों का विश्लेषण करना जिसका एक व्यक्ति निष्पादन करता है। अभिरूचियों के आँकलन करने की तीसरी विधि अभिरूचि परीक्षणों और मापनियों का उपयोग है। अब बहुत से उपकरण उपयोग में हैं और उनमें से बहुसंख्यक व्यावसायिक अभिरूचि से सम्बन्ध रखते हैं।

1) **कुडर अभिरूचि मापनी:** कुडर अभिरूचि मापनियों के विविध प्रारूप और संस्करण हैं। वे विभिन्न दृष्टिकोणों से अभिरूचियों को मापने में सहायता करते हैं और ये विभिन्न उद्देश्यों के लिए निर्मित किए गए हैं। कुडर मापनियों में सामग्रियाँ बलयुक्त पसंद त्रिक प्रकार की हैं। सूचीबद्ध तीन मापनियों में से प्रत्येक के लिए उत्तरकर्त्ता कुडर अभिरूचि मापनियों के निम्नलिखित प्रकार बिल्कुल सामान्य हैं:

   i) कुडर व्यावसायिक वरीयता अभिलेख: असावधानी, नासमझी और सामाजिक रूप से वांछनीय किंतु निराशाजनक उत्तरों के पसंद का पता लगाने के लिए यह दस अभिरूचि पैमानों के साथ सत्यापन पैमाना प्रदान करता है। अभिरूचि पैमाने सम्मिलित करते हैं: आउटडोर, यांत्रिकी, संगणक, वैज्ञानिक, विश्वासोत्पादक, कलात्मक, साहित्यिक, संगीतमय, समाज सेवा और लिपिकीय। बलयुक्त पसंद त्रिक सामग्रियाँ प्रयुक्त होती हैं। उत्तरकर्त्ता प्रदर्शित करता है कौन–सी तीन

गतिविधियाँ जिसे वे सर्वाधिक पसंद और किसे कम पसंद करना चाहेंगे। स्कोर न केवल विशिष्ट व्यवसायों के लिए प्राप्त किए गए हैं बल्कि दस विस्तृत अभिरूचि क्षेत्रों के लिए दिए गए हैं।

ii) **कुडर सामान्य अभिरूचि सर्वेक्षणः** यह एक पुनरावलोकन और कुडर व्यावसायिक प्राथमिकता अभिलेख के नीचे प्रसार के लिए विकसित किया गया है। यह ग्रेड 6 से 12 के लिए निर्मित किया गया है। यह सरलतम भाषा और आसान शब्दावली को संघटित करता है। यह दृढ़ व्यावसायिक रूचि ब्लैंक का एक पुनरावलोकन है।

iii) **कुडर पेशेवर अभिरूचि मापनीः** इस अनुसूची द्वारा आवृत्त पेशे, स्तर में विस्तृत रूप से भिन्न हैं जैसे – बेकर से ट्रक ड्राइवर से लेकर केमिस्ट से वकील तक।

2) **प्रबल पेशेवर अभिरूचि समानताः** यह इस धारणा पर आधारित है कि एक व्यक्ति की दी गई पेशा में सफल व्यक्ति के समान अभिरूचि प्रतिरूप हैं जो उस पेशा में आनन्द एवं संतुष्टि प्राप्त करेगा।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

9) अभिरूचि मापनियों के किन्हीं दो लाभों एवं सीमाओं को लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.5.4 व्यक्तित्व परीक्षण

व्यक्तित्व किसी की शरीर संरचना, सामाजिक भावना और व्यक्तिगत अभिलक्षणों सभी का समावेश होता है। अतः व्यक्तित्व सामाजिक परिस्थितियों में एक व्यक्ति के व्यवहार का संपूर्ण योग है।

व्यक्तित्व परीक्षण के प्रयोजन

व्यक्तित्व परीक्षण निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य हैः

i) यह उपयुक्त शैक्षणिक एवं व्यावसायिक पसंद में शिक्षार्थियों की सहायता करता है। व्यक्तित्व वैयक्तिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक समायोजन और सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः यह व्यक्ति के व्यक्तित्व प्रतिरूप का निदान करने में महत्वपूर्ण है जो देखता है कि वह उन गुणों को धारण करता है जो संभवतः पाठ्यक्रम या वृत्ति जिसे उसने चुना है उसके समायोजन में सार्थकता से योगदान करता है।

ii) भावनात्मक विवादों को दूर करने में यह व्यक्ति की सहायता करता है। जब व्यक्ति शैक्षणिक एवं व्यावसायिक विकल्पों के साथ उचित समायोजन बनाने में परेशानियों का

सामना करता है तो व्यक्तित्व का निदान अनिवार्य हो जाता है और जब भावनात्मक विवाद आते हैं जिनके बारे में व्यक्ति को कोई ज्ञान नहीं है। जब व्यक्ति के मानसिक विवाद के कारण का निदान कर लिया जाता है तब उसके लिए समस्या का समाधान अपने तरीके से कर पाना संभव हो सकता है।

iii) यह शिक्षक एवं परामर्शदाता की सहायता करता है। विविध तकनीकों के माध्यम से व्यक्तित्व परीक्षण इस सूचना को प्राप्त करने में शिक्षक एवं परामर्शदाता की सहायता करेगा और इस सूचना के आधार पर व्यक्ति की सहायता करेगा।

iv) व्यक्ति के उचित चयन में नियोक्ता की सहायता करता है।

v) यह नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की सहायता करता है। एक नैदानिक मनोवैज्ञानिक अपने ग्राहक के लिए सर्वोत्तम उपचार को चुनने में सहायता करने के लिए व्यक्तित्व आँकलन का उपयोग कर सकता है।

व्यक्तित्व परीक्षण की तकनीक

व्यक्तित्व परीक्षण के लिए बहुत-सी तकनीकें प्रयुक्त की जाती हैं, जो इस प्रकार हैं:

- साक्षात्कार
- अवलोकन
- स्व-निर्धारण एवं व्यक्तित्व अनुसूची
- जाँच सूची
- निर्धारण मापनी
- परिस्थितिजन्य परीक्षण या व्यावहारिक परीक्षण
- प्रक्षेपी तकनीक
- उपाख्यानक अभिलेख
- आत्मकथा
- दैनिक डायरी

साक्षात्कार, अवलोकन, निर्धारण मापनी, उपाख्यानक अभिलेख और आत्मकथा पर पहले ही भाग 5.4 के निर्देशन के अमानकीकृत तकनीकों के अंतर्गत चर्चा की जा चुकी है। अन्य तकनीकों को यहाँ वर्णित किया जा रहा है।

जाँच सूची: व्यक्तित्व के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उपागम है इसमें शिक्षार्थियों की अनुभूत की गई समस्याओं को एक तालिका में विकसित करना होता है। उनका उपयोग परामर्श या शिक्षार्थी के सम्बन्ध में सर्वेक्षण करने में एक साधन के रूप में प्रयुक्त होते हैं। दूसरे उद्देश्य के लिए ये अज्ञात रूप से भरे जा सकते हैं। एक समस्या की जाँच सूची में मूलतः समस्याओं की सूची होती है जो अध्ययन किए जाने वाले एक आयु समूह के लिए सामान्य होती है। शिक्षार्थी यह देखता है कि कौन-सी समस्याएँ उसे कई कारणों से परेशान कर रही हैं, वह स्वीकार करने को इच्छुक नहीं हो सकता है कि एक समस्या उससे संबद्ध है, इन जाँच सूचियों का यदि उपयुक्तता से व्याख्या की जाए तो परामर्शदाता के लिए रूचिकर और मददगार आँकड़े मिल जाते हैं। ये असंदिग्ध समस्याओं और कई मामलों में उनके छिपे कारणों को प्रकट कर सकते हैं। उनके महत्वपूर्ण मूल्य एक परामर्श साक्षात्कार के लिए एक आधार के रूप में हो सकते हैं।

प्रक्षेपी तकनीक: पूर्व की मापन तकनीकों के विपरीत व्यक्तित्व के आँकलन के वैश्विक उपागम व्यक्तित्व का समग्रता में अध्ययन करने का प्रयास करता है। इस विधि को प्रायः प्रक्षेपी तकनीक कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को जाँच अभ्यासों में प्रक्षेपित करने को प्रेरित होता है। प्रक्षेपी तकनीक में प्रयुक्त प्रेरण उत्तरों को उठाने का प्रयास करते हैं जो स्वयं के आंतरिक उद्देश्यों का एक प्रक्षेपण है और व्यक्तित्व के गुण प्रायः छुपे रहते हैं और फिर भी प्रायः स्वयं व्यक्ति द्वारा असंदिग्ध रहते हैं। उत्तर देने के लिए पूछे गए प्रश्नों के विषय हो सकते हैं – तस्वीर, स्याही के धब्बों की श्रृंखला या उसी प्रकार की अस्पष्ट प्रेरणा। उत्तरों की व्याख्या की एक लंबी अवधि के प्रशिक्षण की अपेक्षा करती है और यह केवल उन लोगों द्वारा की जानी चाहिए जो विशेष रूप से योग्य हैं।

स्व-निर्धारण एवं व्यक्तित्व मापनी (कागज–पेंसिल व्यक्तित्व परीक्षण): एक व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व के बारे में लिखित अतीत के व्यवहार, अनुभव और इच्छाएँ सूचना का एक अच्छा स्रोत हो सकती हैं। कागज पेंसिल जाँच और व्यक्तित्व मापनियों के माध्यम से स्व-रेटिंग को किया जा सकता है। ये दोनों बाद में साक्षात्कारों के लिए एक सर्वोत्तम आधार बन जाते हैं।

कागज-पेंसिल व्यक्तित्व परीक्षण की सीमाएँ

i) इन मापनियों में बहुसंख्यक प्रश्न व्यक्तिगत मामलों से संबद्ध होते हैं।

ii) विषय (व्यक्ति) का अचेतन विरोध एक व्यापक सीमा तक उनके उत्तरों को भी प्रभावित करता है। वैध एवं सही सूचना प्राप्त करना बहुत मुश्किल होता है।

iii) सुझाव एक अन्य महत्वपूर्ण कारक है जो वैधता को बदल देता है। भावनात्मक रूप से प्रभावित अनुभवों का हमारा पुनर्संग्रहण गलत होने के लिए जिम्मेवार है। इसके अतिरिक्त यह बिल्कुल आसान है कि सुझावात्मक प्रश्न हमें अपने स्वयं के अनुभवों को स्वीकारने में अग्रसर कर सकते हैं।

iv) अस्थायी मनोदशा, आशावाद, दुख आदि का प्रभाव भी जाँच के उत्तरों को प्रभावित करते हैं।

परिस्थितिजन्य या व्यवहारात्मक परीक्षण : यह एक परीक्षण है जिसमें व्यक्ति का व्यवहार जजों द्वारा या उनके सहयोगियों द्वारा मूल्यांकित किया जाता है या वह अपने जीवन से संबद्ध परिस्थितियों का सामना करते हैं, जिसके क्रम में वह अन्य लोगों के लिए अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति करते हैं। विषय उसके व्यक्तित्व के कुछ गुणों को उसकी प्राथमिकता के माध्यम से प्रकट करता है या अन्य के साथ उसके निश्चित संपर्कों के विरुद्ध और उसके जीवन परिस्थिति का सामना करने के स्वतः स्फूर्त विधियों से व्यक्तित्व के गुणों को प्रकट करता है। मनोवैज्ञानिक नाटक और सामाजिक नाटक इस प्रकार की दो तकनीक हैं।

जेनिंइग के अनुसार सामाजिक ड्रामा एक तीव्र विविध अनुभव है जो समूह के सदस्यों का एक सामान्य अनुभव है जो जीवन में कम किया जा चुका है और पूर्ण अभिव्यक्ति से रोक दिया गया है। अनसुलझी समस्याएँ भावनात्मक प्रभाव को दफना देते हैं। अभिव्यक्ति की संभावनाओं को खोजने और स्वतः स्फूर्त व्यवहार के लिए उसके संसाधनों को गतिशील करने में यह प्रक्रिया साधन प्रदान करती है। मनोवैज्ञानिक ड्रामा एक परिस्थिति के अभिनय जिसमें समूह के चयनित सदस्य दर्शक होते हैं को सम्मिलित करता है।

जैसा कि शब्द मनोवैज्ञानिक ड्रामा स्पष्ट करता है व्यक्ति को एक विशिष्ट परिस्थिति में एक स्वतः स्फूर्त भूमिका निभाना होता है। उसके व्यवहार को प्रशिक्षित अवलोकनकर्त्ताओं द्वारा

अवलोकित किया जाता है। यह मान लिया जाता है कि व्यक्ति अपनी आंतरिक अनुभूतियों एवं विवादों को एक भूमिका जिसको वे निभाते हैं में प्रक्षेपित करते हैं।

दैनिक डायरी

शिक्षार्थियों द्वारा लिखी गई दैनिक डायरी व्यक्तित्व के मापन के लिए एक युक्ति के रूप में भी प्रयुक्त की जा सकती है। एक बहुत वैयक्तिक प्रकृति वाली डायरी ऐसी घटनाओं, विचारों और अनुभूतियों के अभिलेख को रख सकते हैं जिनका शिक्षार्थी के लिए बहुत महत्व हो। डायरी यदि उपयुक्तता से लिखी गई है तो व्यक्ति व्यक्तित्व के बहुत से पहलुओं पर प्रकाश डालने का एक उपयोगी माध्यम हो सकती है। यह व्यक्ति के समयानुसार अभिलेख होता है जो शिक्षार्थी के जीवन, गतिविधियाँ जिनमें वह नियमित रूप से वर्तमान में संलग्न है और उसकी कुछ विशेष अभिरूचियों के सामान्य पैटर्न को दिखाने के लिए मूल्यवान है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) खण्ड के अंत में दिए गए "प्रगति जाँच हेतु उत्तर" से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

10) व्यक्तित्व परीक्षण के किन्हीं दो उद्देश्यों का संक्षिप्त विवरण दीजिए। व्यक्तित्व परीक्षण के किन्हीं पाँच तकनीकों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

सभी निर्देशों का उद्देश्य है शिक्षार्थियों को स्वयं पर्याप्त समझ अर्जित करने में सहायता करना और विद्यालय एवं समुदाय द्वारा उपलब्ध कराए गए शैक्षणिक अवसरों का सर्वाधिक बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करने में सक्षम बनाना। व्यक्ति को बौद्धिक पसंदों और समायोजनों को उनको जीवन में निर्माण हेतु दी जाने वाली सहायता निर्देशन है। चतुर पसंद बनाने की योग्यता आंतरिक नहीं होती है यह अवश्य विकसित होती है। निर्देशन का मौलिक उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति में उसकी अपनी समस्याओं का समाधान करने की योग्यता को एक सीमा तक विकसित करना और उसकी अपनी समायोजनों को बनाने में सक्षम बनाना है। व्यक्ति के बारे में मूलभूत आँकड़ों को संग्रह करने के लिए मार्गदर्शक द्वारा नियुक्त तकनीकें जो या तो मानकीकृत हैं या अमानकीकृत।

अमानकीकृत तकनीकों में सम्मिलित हैं – साक्षात्कार, प्रश्नावली, अवलोकन, निर्धारण मापनी, समाजमिति, संचयी अभिलेख, उपाख्यानक अभिलेख और आत्मकथा। मानकीकृत तकनीकें हैं – रूचियों, बुद्धि, अभिरूचियों और व्यक्तित्व के गुणों को मापने के उपकरण।

5.7 इकाई अंत अभ्यास

1) माध्यमिक स्तर के 10 शिक्षार्थियों के लिए उपयुक्त विषय पर एक प्रश्नावली तैयार कीजिए। उनके उत्तरों को पढ़ें। विद्यालय शिक्षा प्रश्नावली की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालते हुए एक रिपोर्ट लिखिए।

2) कक्षाकक्ष शिक्षण में उपलब्धि एवं अभिक्षमता परीक्षण के उपयोग पर विस्तार में चर्चा कीजिए। उपयुक्त उदाहरण दीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY